

पद्मवृषभविक्रामिन् (प०-वृ०+वि०) m. N. pr. eines zukünftigen Buddha Lot. de la b. l. 43.

पद्मव्यूह (प०+व्यू०) m. Bez. eines Samādhi Vjrup. 3.

पद्मशम् adv. von पद्म in der Bed. *einer grossen Zahl* MBh. 1, 233.

पद्मश्री (प०+श्री) 1) m. N. pr. eines Bodhisattva Lot. de la b. l. 2. 257. KATHINĀVAD. 14. — 2) f. N. pr. zweier Fürstinnen RĀGA-TAR. 7, 732. 8, 3481. — Vgl. पद्मा als Name der Çrī.

पद्मश्रीगर्भ (प०+गर्भ) m. N. pr. eines Bodhisattva DAÇABH. 2.

पद्मषण्ड (प०+षण्ड) n. eine Menge von Wasserrosen MBh. 3, 11582. HARIV. 8946. R. 3, 76, 15. — Vgl. पद्मषण्ड.

पद्मसमासन (पद्म+सम+आ०) adj. wohl wie eine Wasserrose sitzend (vgl. पद्मासन), Bein. Brahman's VP. in Verz. d. Oxf. H. No. 109.

पद्मसंभव (प०+सं०) aus einer Wasserrose hervorgegangen; m. 1) Bein. Brahman's HARIV. 3233. 7962. — 2) N. pr. eines buddhistischen Gelehrten KÖPPEN II, 68. 79. 113. 118. 259. fg.

पद्मसरस (प०+सर०) n. Lotusteich, N. pr. verschiedener Scen MBh. 2, 798. RĀGA-TAR. 8, 2422. PAÑĀT. 175, 7.

पद्मसूत्र (प०+सूत्र) n. eine Guirlande von Wasserrosen HARIV. 5188.

पद्मसेन (प०+सेन) m. N. pr. eines Mannes KATHĀS. 42, 199.

पद्मसुषा (प०+सु०) f. Bein. 1) der Gaṅgā. — 2) der Çrī. — 3) der Durgā ÇABDĀRTHAK. bei WILSON.

पद्मस्वामिन् (प०+स्वा०) m. N. pr. eines von Padma errichteten Heiligthums RĀGA-TAR. 4, 694. 6, 222.

पद्महास (प०+हास) m. Bein. Vishṇu's H. c. 72. — Vgl. पद्मभास.

पद्मकार (पद्म+आ०) m. Lotusteich AK. 1, 2, 3, 27. H. 1094.

पद्मकारभट्ट (प०+भट्ट) m. N. pr. eines Gelehrten Verz. d. Oxf. H. 171, b, 20. 172, b, 3.

पद्मात् (पद्म+अत्, अति) 1) adj. f. Ṛ̥ lotusāyugī R. 3, 55, 26. — 2) m. a) Bein. Vishṇu's HARIV. 14119. — b) N. pr. eines Mannes BRAHMAVAIV. P. in Verz. d. Oxf. H. 26, a (Kap. 38. 39). — 3) n. der Same der Wasserrose HĀR. 218.

पद्माट (पद्म+आट von अट्) m. Cassia Tora Lin. AK. 2, 4, 5, 13. — Vgl. चक्र० und in Betreff der Bed. von आट पद्मचारिणी.

पद्मालय (पद्म+आ०) adj. f. आ dessen Wohnsitz eine Wasserrose ist; m. Beiw. und Bein. Brahman's MBh. 3, 12890. f. Beiw. und Bein. der Çrī AK. 1, 1, 4, 22. MBh. 4, 388. HARIV. 9075.

पद्मावत (von पद्म) m. N. pr. eines von Padmavarṇa gegründeten Reichs HARIV. 5230.

पद्मावती (von पद्म) f. 1) Hibiscus mutabilis Lin. (पद्मचारिणी) ĠA-TĀDH. im ÇKDr. — 2) ein best. Prākṛit-Metrum COLERA. Misc. Ess. II, 156 (III, 19). — 3) Bein. der Lakshmi Ġr. 1, 2. — 4) N. pr. einer der Mütter im Gefolge des Skanda MBh. 9, 2627. — 5) Bein. der Göttin मनसा ÇABDAR. im ÇKDr. ०प्रिय der Gemahl der P., Bein. des Königs Ġaratkāru dies. ebend. — 6) N. pr. einer Göttin, die die Befehle des 23sten Arhant's der gegenwärtigen Avasarpinī ausführt, H. 46. — 7) N. pr. einer Gemahlin des Königs Çrgāla HARIV. 5701. — 8) N. pr. einer Gemahlin Judhishṭhira's, Königs von Kāçmīra, RĀGA-TAR. 3, 383. — 9) N. pr. der Gemahlin Ġajadeva's Ġr. 10, 9. 11, 21. — 10)

N. pr. einer Dichterin Journ. of the Am. Or. S. 6, 524. — 11) N. pr. einer Gemahlin des Fürsten Vitrabāhu VER. in Verz. d. Oxf. H. 152, b, 27. des Fürsten Najapāla ebend. 36; vgl. VER. in LA. 8, 12. — 12) N. pr. einer Stadt VP. 479; vgl. N. 70. — 13) N. pr. eines Flusses ÇABDAR. im ÇKDr. — 14) N. des 17ten Lambaka im Kathāsarisāgara KATHĀS. 1, 9.

1. पद्मासन (पद्म+आसन) n. 1) eine Wasserrose als Sitz: ०स्थापि पितामहाय KUMĀRAS. 7, 86. लक्ष्मी: — पद्मासने स्थिता HARIV. 14027. — 2) eine best. Art zu sitzen der beschaulichen Asketen: सव्यं पादमुपादाय दक्षिणोपरि न्यसेतत:। तथैव दक्षिणं सव्यस्योपरिष्ठादिधानवित् ॥ पद्मासनमिति प्रोक्तं त्रपकर्मसु शस्यते। ÇĀRTĀNANDAT. in Verz. d. Oxf. H. 102, b, 13. figg. ऊर्वोरूपरि विन्यस्य सम्यक्पादतले उभे। अङ्गुष्ठौ च निबद्धीयाद्दस्ताभ्यां व्युत्क्रमात्तथा ॥ पद्मासनमिति प्रोक्तं योगिनो हृदयंगमम् ॥ TANTRASĀRA im ÇKDr. u. आसन. किमगिरिशिलाबद्ध० Spr. 808. Verz. d. Oxf. H. 89, b, 9. VER. in LA. 13, 7. — 3) eine Art Cottus Ind. St. 2, 47, N. 2.

2. पद्मासन (wie eben) 1) adj. f. आ in einer Wasserrose sitzend, von Brahman VP. in Verz. d. Oxf. H. No. 109. von Çiva Çiv. या तु पद्मासना देवी तो पृथ्वीं परिचक्षते HARIV. 11446. von der Göttin Manasā ÇKDr. u. पद्मोद्भवा. Vgl. कमलासन. — 2) adj. auf die पद्मासन (s. 1. पद्मासन 2.) genannte Art sitzend; davon nom. abstr. ०ता f. Verz. d. Oxf. H. 92, a, 7. — 3) m. die Sonne WILS.

पद्माच्छा (पद्म+आच्छा) f. = पद्मचारिणी RĀGAN. im ÇKDr.

पद्मिन् (von पद्म) 1) adj. gefleckt (von Elefanten); m. ein gefleckter Elephant (vgl. पद्म 2. und पद्मक 2.): नागा मत्ता: — हेमकता: कृतापीडा: पद्मिनो हेममालिन: MBh 2, 2075. 12, 959. 4280. य: सद्धं सद्धनाणां गजानामतिपद्मिनाम्। ईनानो वितते यन्ने दक्षिणामत्यकालयत् ॥ 926. ईशादस्तान्महाकायान्काञ्चनस्रग्विषितान्। पद्मिनो वै सद्धनाणि प्रादां दश च सप्त च ॥ 13, 4924. शतं गजानामपि पद्मिनो तथा शतं गिरीणामिव हेमप्रङ्गिणाम् (प्रङ्गि ist wie विषाण zugleich Horn und Fangzahn des Elefanten; vgl. प्रङ्गिन् Elephant) 1, 7344. Nach AK. 2, 8, 3, H. c. 174 und HĀR. 14 schlechtweg Elephant; vgl. पुष्करिन्. पद्मिनी Elephantenweibchen DHAR. im ÇKDr. — 2) पद्मिनी f. a) Nelumbium speciosum (die ganze Pflanze, während पद्म nur die Blüthe ist; derselbe Unterschied ist zwischen अञ्जल und अञ्जिनी, नलिन und नलिनी, पङ्कज und पङ्कजिनी u. s. w.); eine Menge von Wasserrosen, Lotusteich gaṇa पुष्करादि zu P. 5, 2, 135. AK. 1, 2, 3, 38. TRIK. 1, 2, 36. = अञ्जल, अञ्जिनी und सरसी H. an. 3, 390. = सरोरुह und पद्मसंघात MED. n. 86. = पद्म und सरोवर VICVA im ÇKDr. = मृणाल ÇABDAM. ebend. पद्मिनीव सुतेयं ते क्रुदादन्यरुदं गता MBh. 1, 7228. कृत्स्नस्तपरामृष्टं व्याकुलामिव पद्मिनीम् 3, 2669. जलस्थानेषु रम्येषु पद्मिनीभिश्च संकुलम् (हिमवत्तम्) 9928. प्रमथ्य च रणे सेनां पद्मिनीं वारुणो यथा 6, 4565. 3, 2541 (scheint verdorben zu sein). वसामि फुल्लामु च पद्मिनीषु 13, 521. ०प्रव्या देवी सुच. 2, 172, 4. सुरगज इव बिभ्रत्पद्मिनीं दत्तलाम् KUMĀRAS. 3, 76. BHĀG. P. 4, 7, 46 (BUANOUF fälschlich Elephantenweibchen). स्कन्धावलमोद्धृतपद्मिनीक (द्विपेन्द्र) RAĞH. 16, 68. शिशिरमथितां पद्मिनीं वान्यत्रपाम् MEGH. 81. सपद्मो पद्मिनीमिव MBh. 6, 4613. R. 5, 18, 6 (सपद्मामिव zu lesen). KATHĀS. 21, 10. पद्मच्छायासु — दीर्घिकापद्मिनीनाम् MĀLAV. 33. वारि — आदाय पद्मिनीपत्नै: R. 3, 76, 12. यथा वनान्नि:सरतो दत्ता धृता मतङ्गजेन्द्र-